सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-5: जब जनता बगावत करती है

SHIVOM CLASSES

ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियाँ

इन नीतियों से राजाओं , रानियों , किसानों , जमीदारों , आदिवासीयों , सिपाहियों , सब पर तरह-तरह से असर पड़ा। जो नीतियाँ और कार्रवाई जनता के हित में नही होती या जो उनकों भावनाओं को ठेस पहुँचाती हैं उनका लोग किस तरह विरोध करते हैं।

कंपनी के व्यापार की प्रकृति कंपनी के शुरुआती दिनों में व्यापार बहुत सीमित था। कंपनी के व्यापारियों ने इंग्लैंड से भारत में सोना, रत्न, विलासिता का सामान आदि आयात किया और भारत से इंग्लैंड को सूती कपड़े, मसाले आदि का निर्यात किया।

नवाबों की छिनती सत्ता

अठारहवीं सदी के मध्य से ही राजाओं और नवाबों की ताकत छिनने लगी थी। उनकी सत्ता और सम्मान दोनों छिनने लगे थे। बहुत सारे राजदरबारों में रेजिडेंट तैनात कर दिए गए थे। स्थानीय शासकों की स्वतंत्रता घटती जा रही थी। उनकी सेनाओं को भंग कर दिया गया था। उनके राजस्व वसूली के अधिकार व इलाके एक-एक छीने जा रहे थे।

झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई

रानी लक्ष्मीबाई (Rani Lakshmi Bai) का जन्म 19 नवंबर, 1828 को काशी के असीघाट, वाराणसी में हुआ था. इनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और माता का नाम 'भागीरथी बाई' था. इनका बचपन का नाम 'मणिकर्णिका' रखा गया परन्तु प्यार से मणिकर्णिका को 'मनु' पुकारा जाता था. मनु जब मात्र चार साल की थीं, तब उनकी मां का निधन हो गया.

चाहती थीं कि उनके पति की मृत्यु के बाद उनके गोद लिए हुए बेटे को राजा मान ले।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

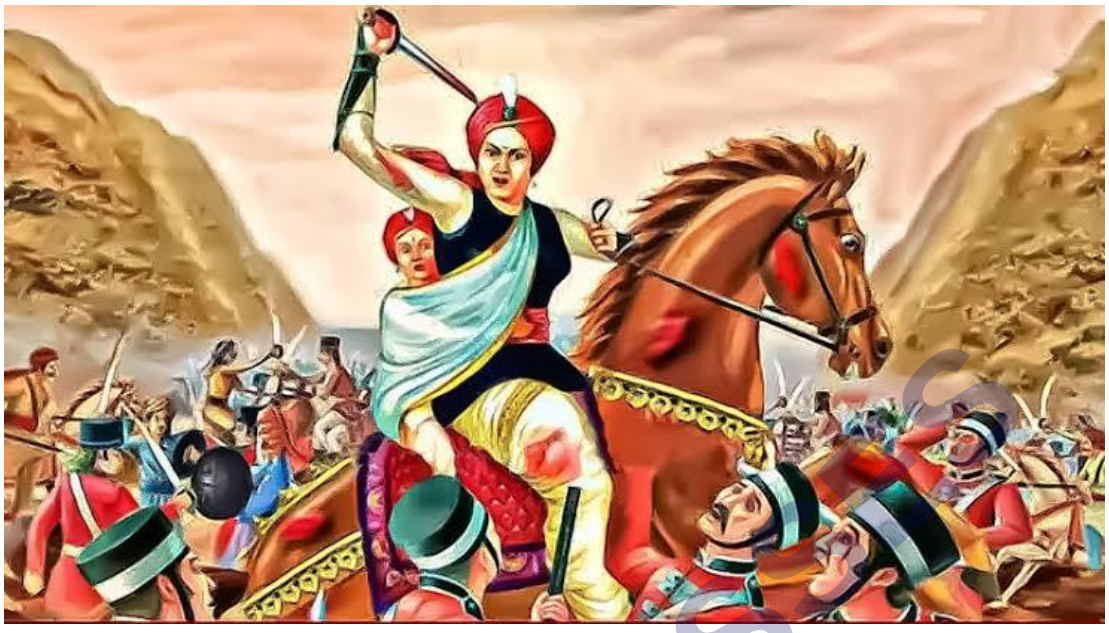

पेशवा बाजीराव द्वितीय

बाजीराव द्वितीय (१७७५ – 1 जनवरी, १८५१), सन १७९६ से १८१८ तक मराठा साम्राज्य के पेशवा थे। इनके समय में मराठा साम्राज्य का पतन होना शुरू हुआ। इनके शासनकाल में अंग्रेजों के साथ संघर्ष शुरू हुआ।

के दत्तक पुत्र नाना साहेब ने कंपनी से आग्रह किया कि उसके पिता को जो पेंशन मिलती थी वह उनकी मृत्यु के बाद उन्हें मिलने लगे।

अवध की रियासत

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

अंग्रेजों के कब्ज़े में जाने वाली आखिरी रियासत में से थी। 1801 में अवध पर एक सहायक संधि थोपी गयी और 1856 में अंग्रेजों ने उसे अपने कब्ज़े में ले लिया।

डलहौजी

लार्ड डलहौजी की राज्य हड़प नीति या गोद प्रथा निषेध की नीति की विशेषताएं , इस नीति की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि जिन शासकों का उत्तराधिकारी नहीं होता था वे पुत्र को गोद नहीं ले सकते थे। इस नीति को लागू करने के लिए डलहौजी ने सभी भारतीय राज्यों/रियासतों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया।

युद्ध की नीति – युद्ध करके अपनी सीमाओं का विस्तार करना।

कुप्रशासन की नीति -राज्यों पर कुप्रशासन का आरोप लगाकर उन्हें अधिग्रहित कर लेना।

व्यपगत की नीति – उत्तराधिकारी न होने पर राज्य को अधिग्रहित करना।

गर्वनर जनरल डलहौजी ने ऐलान कर दिया कि रियासत के शासन ठीक से नही चल रहा है। कंपनी ने मुगलों के शासन को पूरी तरह से खत्म करने के लिए कंपनी द्वारा जारी सिक्कों पर से मुग़ल बादशाह का नाम हटा दिया गया। बहादुर शाह जफ़र अंतिम मुगल बादशाह थे।

किसान और सिपाही

गाँवो में किसान और जमींदार भारी-भरकम लगान और कर वसूली के सख्त तौर तरीकों से परेशान थे और ऐसे बहुत सारे लोग महाजनों से लिया कर्ज नही लौटा पा रहें थे। भारतीय सिपाही जो कंपनी में काम करते थे अपने वेतन , भत्तों और सेवा शर्तों के कारण परेशान थे। कई नए नियम सैनिकों के धार्मिक भावनाओं और आस्थाओं को ठेस पहुँचाते थे।

सुधारों पर प्रतिक्रिया

अंग्रेजों को लगता था कि भारतीय समाज को सुधारना जरूरी है। सती प्रथा को रोकने और विधवा विवाह को बढ़ावा देने के लिए कानून बनाए गए। अंग्रेजी भाषा की शिक्षा को जमकर प्रोत्साहन दिया गया। 1830 के बाद कंपनी ने ईसाई मिशनरियों को खुलकर काम करने और यहाँ तक कि जमीन व संपति जुटाने की भी छूट दे दी ।1850 में एक नया कानून बनाया गया जिससे ईसाई

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

धर्म को अपनाना और आसान हो गया। अंग्रेज उनका धर्म , उनके सामाजिक रीति-रिवाज और परंपरागत जीवनशैली को नष्ट कर रहे हैं।

सैनिक विद्रोह

जब सिपाही इकट्ठा होकर अपने सैनिक अफसरों का हुक्म मानने से इंकार कर देते हैं तो उसे सैनिक विद्रोह कहते है

वर्ष 1857 का विद्रोह शताब्दियों से शोषित, प्रताड़ित एवं उपेक्षित भारतीय जन-समूह की स्वतंत्रता प्राप्ति की तीव्र उत्कंठा का प्रतीक है। 1857 में हुए इस विद्रोह के सम्पूर्ण घटनाक्रम पर सूक्ष्म दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है कि यह एक राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत स्वतंत्रता संघर्ष था, परन्तु कुछ अंग्रेज इतिहासकारों और उनके समर्थक भारतीय इतिहासकारों द्वारा इसे 'सैनिक विद्रोह' अथवा 'गदर' की संज्ञा प्रदान कर इसके महत्व को कम करने की कोशिश की जाती है।

मेरठ से दिल्ली तक

29 मार्च 1857 को युवा सिपाही – मंगल पांडे को बैरकपुर में अपने अफसरों पर हमला करने के आरोप में फाँसी पर लटका दिया गया। सिपाहियों ने नए कारतूसों के साथ फौजी अभ्यास करनेबसे इनकार कर दिया। सिपाहियों को लगता था कि उन कारतूसों पर गाय और सुअर की चर्बी का लेप कि चढ़ाया गया था। 85 सिपाहियों को नौकरी से निकाल दिया गया। उन्हें अपने अफसरों का हुक्म न मानने के आरोप में 10-10 साल की सजा दी गई। यह 9 मई 1857 की बात है।

10 मई को सिपाहियों ने मेरठ की जेल पर धावा बोलकर वहाँ बंद सिपाहियों को आजाद करा लिया । उन्होंने अंग्रेज अफसरों पर हमला करके उन्हें मार गिराया। उन्होंने बंदूक और हथियार कब्ज़े में ले लिए और अंग्रेजों की इमारतों व संपत्तियों को आग के हवाले कर दिया। उन्होंने फिरंगियों के खिलाफ युद्ध का ऐलान कर दिया। 10 मई की रात को घोड़ों पर सवार होकर मुँह अँधेरे ही दिल्ली पहुँच गईं। जैसे ही उनके आने की खूबर फैली , दिल्ली में तैनात टुकड़ियों ने भी बगावत कर दी। अब वे बादशाह से मिलना चाहते थे। और बहादुर शाह जफ़र को अपना नेता घोषित कर दिया।

बगावत फैलने लगी

हर रेजिमेंट में सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया ये विद्रोह दिल्ली , कानपुर , लखनऊ तक फैल गया।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

कानुपर

सवर्गीय पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहेब कानुपर के पास रहते थे। उन्होंने सेना इकट्ठा की और ब्रिटिश सैनिकों को शहर से खदेड़ दिया। और खुद को पेशवा घोषित कर दिया।

नाना साहेब
(19 मई 1824 - 6 अक्टूबर 1858)

लखनऊ

लखनऊ की गद्दी से हटा दिए गए नवाब वाजिद अली शाह के बेटे बिरजिस क़द्र को नया नवाब घोषित कर दिया गया। उनकी माँ बेगम हज़रत महल ने अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोहों को बढ़ावा देने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

बेगम हज़रत महल

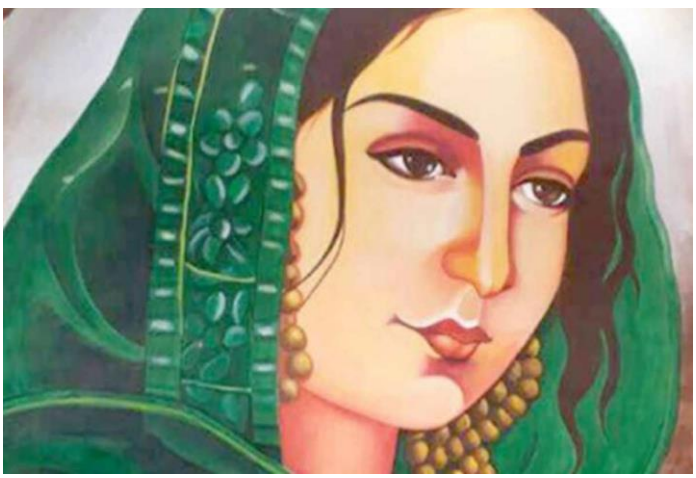

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

झाँसी

रानी लक्ष्मीबाई भी विद्रोही सिपाहियों के साथ जा मिली। उन्होंने नाना साहेब के सेनापति ताँत्या टोपे के साथ मिलकर अंग्रेजों को भारी चुनौती दी।

बिहार :- कुँवर सिंह ने भी विद्रोही सिपाहियों के साथ दिया और महीनों तक अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी।

कंपनी का पलटवार

1857 में दिल्ली दोबारा अंग्रेजो के कब्ज़े में आ गई। अंतिम मुग़ल बादशाह बहादुर शाह जफ़र पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई। मार्च 1858 में लखनऊ अंग्रेजो के कब्ज़े में चला गया। जून 1858 में रानी लक्ष्मीबाई की शिकस्त हुई और उन्हें मार दिया गया। ताँत्या टोपे मध्य भारत के जंगलों में रहते हुए आदिवासीयों और किसानों की सहायता से छापामार युद्ध चलाते रहे।

अंग्रेज़ो ने 1859 के आखिर तक देश पर दुबारा नियंत्रण पा लिया था।लेकिन अब वे पहले वाली नीतियों सहारे शासन नही चला सकते थे।

अंग्रेज़ो ने कुछ अहम बदलाव किए –

- ब्रिटिश संसद ने 1858 में एक नया कानून पारित किया और ईस्ट इंडिया कंपनी के सारे अधिकार ब्रिटिश साम्राज्य के हाथ में सौंप दिए ताकि भारतीय मामलों को ज्यादा बेहतर ढंग से सँभाला जा सके।
- देश के सभी शासकों को भरोसा दिया गया कि भविष्य में कभी भी उनके भूक्षेत्र पर कब्जा नही किया जाएगा। उन्हें अपनी रियासत अपने वंशजों , यहाँ तक कि दत्तक पुत्रों को सौंपने की छूट दे दी गई। लेकिन उन्हें इस बात के लिए प्रेरित किया गया कि वे ब्रिटेन की रानी को अपना अधिपति स्वीकार करें। इस तरह , भारतीय शासकों को ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन शासन चलाने की छूट दी गई।
- सेना में भारतीयों का अनुपात कम करने और यूरोपीय सिपाहियों की संख्या बढ़ाने का फैसला लिया गया। यह भी तय किया गया कि अवध , बिहार , मध्य भारत , और दक्षिण भारत से सिपाहियों को भर्ती करने की बजाय अब गोरखा , सिखों , और पठानों में से ज्यादा सिपाही भर्ती किए जाएँगे।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- मुसलमानों की ज़मीन और संपति बड़े पैमाने पर जब्त की गई । उन्हें संदेह व शत्रुता के भाव से देखा जाने लगा। अंग्रेज़ो को लगता था कि यह विद्रोह उन्होंने ही खड़ा किया था।
- अंग्रेज़ो ने फैसला किया कि वे भारत के लोगों के धर्म और सामाजिक रीति-रिवाजों का सम्मान करेंगे।

SHIVOM CLASSES
8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 64)

प्रश्न 1 झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की अंग्रेजों से ऐसी क्या माँग थी जिसे अंग्रेजों ने ठुकरा दिया ?

उत्तर – झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई चाहती थी कि अंग्रेज उनके पति की मृत्यु के बाद उनके गोद लिए हुए पुत्र को झाँसी का राजा मान लें , परन्तु अंग्रेजों ने उनकी यह मांग ठुकरा दी।

प्रश्न 2 ईसाई धर्म अपनाने वालों के हितों की रक्षा के लिए अंग्रेजों में क्या किया ?

उत्तर – 1850 में एक नया कानून बनाया गया जिससे ईसाई धर्म को अपनाना और आसान हो गया। इस कानून में प्रावधान किया गया था कि अगर कोई भारतीय व्यक्ति ईसाई धर्म अपनाता है तो उसके पूर्वजों की संपत्ति पर उसका अधिकार पहले जैसे ही रहेगा।

प्रश्न 3 सिपाहियों को नए कारतूसों पर क्यों ऐतराज़ था ?

उत्तर – सिपाहियों को लगता था कि नए कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी का लेप चढ़ाया गया था। प्रयोग करने से पहले इन कारतूसों को मुँह से छीलना पड़ता था। इसी कारण सिपाहियों को इन कारतूसों पर एतराज था और उन्हें इन कारतूसों के साथ सैनिक अभ्यास करने से मना कर दिया। इसलिए 85 सिपाहियों को नौकरी से निकाल दिया गया। उन्हें अपने अफ़सरों का हुक्म न मानने के आरोप में 10-10 साल की सजा दी गई। यह 9 मई 1857 की बात थी।

प्रश्न 4 अंतिम मुग़ल बादशाह ने अपने आखिरी साल किस तरह बिताए ?

उत्तर – सितंबर 1857 में दिल्ली दोबारा अंग्रेज़ों के कब्जे में आ गई। अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई। उनके बेटों को उनकी आँखों के सामने गोली मार दी गई। बहादुर शाह और उनकी पत्नी बेगम जीनत महल को अक्तूबर 1858 में रंगून जेल में भेज दिया गया। इसी जेल में नवंबर 1862 में बहादुर शाह ज़फ़र ने अंतिम साँस ली। इस पर उन्होंने अपने अंतिम साल जेल में घुट – घुट कर गुज़ारे।

प्रश्न 5 मई 1857 से पहले भारत में अपनी स्थिति को लेकर अंग्रेज शासकों के आत्मविश्वास के क्या कारण थे?

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर – मई 1857 से पहले भारत में अपनी स्थिति को लेकर अंग्रेज शासकों के आत्मविश्वास के कई कारण थे:-

(क) अठारहवीं सदी के मध्य ही देशी राजाओं और नवाबों की शक्ति छिनने लगी थी। उनकी सत्ता और सम्मान, दोनों ही समाप्त होते जा रहे थे। बहुत से देशी राजाओं के दरबार में रेजिडेंट नियुक्त कर दिए गए थे जिससे उनकी स्वतंत्रता घटती जा रही थी। उनकी सेनाओं को भी भंग कर दिया गया था। उनके राजस्व वसूली के अधिकार तथा प्रदेश एक-एक करके छीने जा रहे थे।

(ख) अनेक स्थानीय शासकों ने अपने हितों गई रक्षा के लिए कंपनी के साथ बातचीत भी की। उदाहरण के लिए झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई चाहती थीं कंपनी उनके पति मृत्यु के बाद उनके गोद लिए हुए पुत्र को राजा मान ले। इसी प्रकार पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहिब ने भी कंपनी से निवेदन किया कि उनके पिता को जो पेंशन मिलती है, उनकी मृत्यु के बाद वह उन्हें मिलने लगे। परंतु अपनी श्रेष्ठता और सैनिक शक्ति के नशे में चूर कंपनी ने इन निवेदनों को ठुकरा दिया।

(ग) 1801 में अवध पर एक सहायक संधि थोपी गयी। 1856 में अंग्रेजों ने अवध को अपने अधिकार में ले लिया। गवर्नर – जनरल डलहौजी ने अवध के शासक पर यह आरोप लगाया कि उनके राज्य का शासन ठीक से नहीं चलाया जा रहा है। इसलिए शासन में सुधार लाने के लिए ब्रिटिश प्रभुत्व ज़रूरी है।

(घ) कंपनी ने मुग़लों के शासन को समाप्त करने की भी पूरी योजना बना ली। कंपनी द्वारा जारी किए गए सिक्कों पर से मुग़ल बादशाह का नाम हटा दिया गया था। 1849 में गवर्नर जनरल डलहौजी ने घोषणा की कि बहादुर शाह जफर की मृत्यु के बाद उनके परिवार को लाल किले से निकाल कर दिल्ली में कहीं और बसाया जाएगा।

(ड़) 1856 में गवर्नर – जनरल कैनिंग ने निर्णय लिया कि बहादुर शाह जफ़र अंतिम मुग़ल बादशाह होंगे। उनकी मृत्यु के बाद ‘ बादशाह ‘ की पदवी समाप्त कर दी जाएगी और उनके किसी भी वंशज को बादशाह नहीं माना जाएगा। उन्हें केवल राजकुमारों के रूप में ही मान्यता दी जाएगी। सच तो यह है कि अपनी बढ़ती हुई शक्ति के साथ – साथ अंग्रेज़ी शासकों का आत्मविश्वास भी बढ़ता जा रहा था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

प्रश्न 6 बहादुर शाह जफर द्वारा विद्रोहियों को समर्थन दे देने से जनता और राज परिवारों पर क्या असर पड़ा ?

उत्तर – जनता में पहले ही अंग्रेजों की नीतियों के कारण रोष फैला हुआ था। नए कारतूसों की घटना ने सैनिकों के साथ–साथ जनता के रोष को भी बढ़ा दिया था। अंग्रेजों को लगता था कि नए कारतूसों के कारण पैदा हुई उथल – पुथल कुछ समय में शांत हो जाएगी। परंतु जब बहादुर शाह जफर ने विद्रोह को अपना समर्थन दे दिया तो स्थिति बदल गई। प्रायः ऐसा होता है कि जब लोगों को कोई रास्ता दिखाई देने लगता है तो उनका उत्साह और साहस बढ़ जाता है। इससे उन्हें आगे बढ़ने के लिए आत्मबल मिलता है और यही हुआ। समाचार फैलते ही स्थान-स्थान पर विद्रोह होने लगे। इन्हें कुचलने के लिए अंग्रेजों को अगले दो साल तक संघर्ष करना पड़ा। अंग्रेजों से पहले देश के एक बहुत बड़े भाग पर मुगल साम्राज्य का शासन था। अधिकतर छोटे शासक और रजवाड़े मुग़ल बादशाह के नाम पर ही अपने-अपने प्रदेश का शासन चलाते थे। अब वे ब्रिटिश शासन के विस्तार से भयभीत थे। वे सोचते थे कि यदि मुगल बादशाह दोबारा शासन स्थापित कर लें तो वे मुगल आधिपत्य में दोबारा अपने प्रदेश का शासन निश्चित होकर चलाने लगेंगे। अतः वे भी विद्रोह के समर्थक बन गए।

प्रश्न 7 अवध के बागी भूस्वामियों से समर्पण करवाने के लिए अंग्रेजों ने क्या किया ?

उत्तर – अंग्रेजों ने अवध के बागी भूस्वामियों से समर्पण करवाने के लिए निम्नलिखिति प्रयास किए :-

- अंग्रेजों ने कहा कि जो भूस्वामी वफादार रहेगा उनको इनाम दिया जायेगा।
- जो भूस्वामी विद्रोह में भाग लें चुके थे। उन्हें विद्रोह से बाहर निकलने को कहा गया। अगर वे विद्रोह नहीं करेंगे तो जमीन पर उनको पूरा अधिकार दे दिया जायेगा।
- अगर किसी भूस्वामियों ने अंग्रेजी अधिकारी की हत्या नहीं की है तो वे सुरक्षित रहेंगे।
- आखिरी में अंग्रेज जिन भूस्वामियों दबा नहीं पाए तो उन पर केस चला दिया। अंत में काफी भूस्वामियों को फांसी पर लटका दिया।

प्रश्न 8 1857 की बात के फलस्वरूप अंग्रेजों ने अपनी नीतियाँ किस तरह बदली ?

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर – (1) ब्रिटिश संसद ने 1858 में एक नया कानून पारित किया। इसके अनुसार ईस्ट इंडिया कंपनी के सभी अधिकार ब्रिटिश सम्राट को सौंप दिए गए, ताकि भारतीय मामलों से बेहतर ढंग से निपटा जा सके। ब्रिटिश मंत्रिमंडल के एक सदस्य को भारत मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया। उसे भारत के शासन से संबंधित मामलों को सँभालने की जिम्मेदारी सौंपी गई। उसे सलाह देने के लिए एक परिषद् बनाई गई जिसे ' इंडिया काउंसिल ' कहा जाता था। भारत के गवर्नर–जनरल को वायसराय का पद दिया गया और उसे इंग्लैंड के राजा या रानी का निजी प्रतिनिधि घोषित कर दिया गया। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार ने भारत के शासन की जिम्मेदारी सीधे अपने हाथों में ले ली।

(2) देश के सभी शासकों को भरोसा दिलाया गया कि भविष्य में कभी भी उनके भूक्षेत्र पर अधिकार नहीं किया जाएगा। उन्हें अपनी रियासत अपने वंशजों, यहाँ तक कि दत्तक पुत्रों को सौंपने को भी छूट दे दी गई। परंतु उन्हें इस बात के लिए प्रेरित किया गया कि वे ब्रिटेन की रानी को अपना अधिपति स्वीकार करें। भारतीय शासकों को ब्रिटिश शासन के अधीन शासन चलाने की छूट दे दी गई।

(3) सेना में भारतीय सिपाहियों का अनुपात कम करने और यूरोपीय सिपाहियों की संख्या के निर्णय लिया गया। यह भी निश्चित किया गया कि अवध, बिहार, मध्य भारत और दक्षिण भारत से सिपाहियों को की बजाय अब गोरखा, सिखों और पठानों में से अधिक सिपाही भर्ती किए जाएँगे।

(4) मुसलमानों की ज़मीन और संपत्ति बड़े पैमाने पर जब्त की गई। उन्हें शत्रुता की दृष्टि से देखा जाने लगा। अंग्रेजों को लगता था कि 1857 का विद्रोह मुसलमानों ने ही खड़ा किया है।

(5) अंग्रेज़ों ने निर्णय लिया कि वे भारतीय धर्मों और सामाजिक रिवाजों का सम्मान करेंगे।

(6) भू–स्वामियों और ज़मींदारों की रक्षा करने तथा ज़मीन पर उनके को बनाये रखने के लिए नई नीतियाँ बनाई गईं।

इस प्रकार, 1857 के बाद भारत में अंग्रेज़ी शासन के इतिहास का एक नया चरण आरंभ हुआ।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)